चतुर्थ अध्याय

''चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज जीवन की समस्याएँ''

"चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज जीवन की समस्याएँ"

प्रस्तावना -

चंद्रकांता स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों में एक श्रेष्ठ कहानीकार हैं। श्रेष्ठ कहानीकार होने के साथ-साथ वह एक श्रेष्ठ उपन्यासकार भी हैं। कहानी, उपन्यास, कविता आदि की रचयिता के नाते हिंदी में अपना स्थान बनाए हुई हैं। उनकी पहली कहानी 'खून के रेशे' सितंबर 1967 में कल्पना (हैद्राबाद) मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई। अब तक उनके छ: उपन्यास आठ कहानी संग्रह और दो कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

चंद्रकांता हिंदी की प्रगतिशील लेखिका हैं। साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्यकार अपनी रचना के लिए अनुभूत जीवन से ही विषय चुनता है। लेखिका ने भी, जो भोगा है, देखा है, उसको अपनी रचनाओं में चित्रित किया है।

उनके साहित्य में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्थाओं से उद्‌भूत जन साधारण के मानसिक अंतर्द्वंद्व का जिक्र उन्होंने अपनी कहानियों में बड़ी खूबसूरती के साथ किया है। चंद्रकांता की कहानियाँ कथ्यगत विविधता से ओत-प्रोत हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में कहीं टूटते-बिखरते संस्कारजन्य विश्वासों और मानवीयता के बदलते चेहरों का वर्णन किया है तो कहीं मन में पलते भ्रम और टूटते मानवीय रिश्तों की संवेदना का भी समावेश किया है।

चंद्रकांता चारों ओर व्याप्त दु:ख, कष्ट, आतंक और अनिश्चय के बीच भी किसी दलदल में फंसने के बजाय इससे बाहर निकलने के लिए कठिन संघर्ष करने में विश्वास करती हैं। मानवीयता के चेहरे को सुधारने-संवारने की चेष्टा ही उनके लेखन का मूल उद्‌देश्य है। उन्होंने हर जगह भोगे परिवेश का चित्रण अपने साहित्य में किया है।

'सूरज उगने तक' और 'दहलीज पर न्याय' कहानी संग्रह की हर कहानी की विशेषता अलग है। हर-कहानी में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया है।

4.1 सामाजिक समस्याएँ -

सामाजिक समस्या के अंतर्गत समाज में जो दिखाई देता है उसका वर्णन आता है। इसमें बहुत-सी समस्याएँ होती हैं, जिसको हल करने के लिए बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मानव में जो जाति, वंश और धर्म के आधार पर संघर्ष निर्माण होते हैं, उनका भी स्पष्टीकरण इन समस्याओं में किया जाता है। मानव समाज के सहारे ही जीता है और उसका अंत भी उसी में होता है। औद्योगिकरण तथा पाश्चात्य मूल्यों के प्रभाव के परिणाम स्वरूप आचार-विचार में आए हुए परिवर्तन पारिवारिक स्थिति को अस्थिर बनाते हैं और उससे सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती हैं।

4.1.1. परिवार एवं दांपत्य संबंध की समस्या -

परिवार के संदर्भ में अनेक विद्वानों की अपनी-अपनी धारणाएँ हैं। उन्होंने उसकी आवश्यकता तथा उद्भव के संदर्भ में अपनी मान्यता प्रदान की है। मानव के लिए कामपूर्ति अत्यावश्यक चीज है। पालन-पोषण और सुरक्षा तथा काम संबंध को लेकर ही तो परिवार की निर्मिति हुई दिखाई देती है। परिवार जैसी प्राथमिक एवं सर्वव्यापी सामाजिक संस्था का उद्भव निश्चय ही मनुष्य की सहज जैविक आवश्यकताओं और आधारभूत सामाजिक वृत्तियों से हुआ है। परिवार के महत्त्व को संबोधित कर डा. उषा मंत्री अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त करती हैं - ''परिवार इसी लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं कि एक ओर जहाँ उसमें थकी हुई पीढ़ी आश्रय पाती है, वहीं वह भावी पीढ़ी का निर्माण भी है। परिवार में ही भूत, भविष्य, वर्तमान और भविष्य का साकार रूप निश्चित होता है।''[1]

आधुनिक काल में परिवार एवं दांपत्य संबंध में अधिकाधिक टकराव निर्माण हो रहा है। परिवार में रहनेवाले हर-एक सदस्य के प्रति दूसरे सदस्य के मन में अनास्था निर्माण होती दिखाई देती है। परिणाम स्वरूप परिवार विभक्त हो रहे हैं। पहले संयुक्त परिवार पद्धति थी, जिसमें परिवार के प्रमुख के कहने पर पूरा परिवार चलता था। दादा-दादी के अच्छे संस्कार छोटे बच्चे पर होते थे। परंतु वर्तमान परिस्थिति में परिवार विघटित हो रहे हैं। दांपत्य के मध्य प्रेम-संबंध प्रस्थापित होने के बजाय बिगड़ रहे हैं। रिश्ते-नातों में बनते बिगड़ते संबंधों की स्थिति निर्माण हो गई है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में बड़े पैमाने पर अनेक साहित्यिकों ने परिवार एवं दांपत्य संबंध को रेखांकित किया है। लेखिका भी इससे अनछुए नहीं है। उन्होंने तो बनते-बिगड़ते संबंध, रिश्ते-नातों के बीच निर्मित लचीलापन आर्थिक व्यवहार के कारण पारिवारिक अनौचित्य पर पड़े प्रभाव का चित्रण अपने कहानियों में किया है।

4.1.2 टूटते दांपत्य संबंध -

चंद्रकांता ने टूटते दांपत्य संबंध, बहन, भाई के बदलते रिश्ते आदि का कई कहानियों में चित्रण किया है।

'नानी तुम ?' कहानी में लेखिका ने नायिका प्रिया और नायक प्रभाकर के टूटते संबंधों को चित्रित किया है। डा. प्रिया अमरिका में एम्. डी. करने के बाद वहीं नौकरी करती है। प्रभाकर नामक युवक के साथ शादी करती है, शादी के बाद साल भर ठीक-ठाक चलता है। लेकिन प्रिया के गर्भ में चिण्टू आता है तो परेशानियाँ आती हैं। प्रिया की अस्पताल की व्यस्त रखनेवाली नौकरी और प्रभाकर का दिनों-दिन फैलता व्यापार इसी वजह से दोनों तंग रहते हैं।

उनके संबंध टूटने की खास वजह तो चिण्टू की बीमारी है। चिण्टू जन्म से ही दिल का मरीज होता है। काफी कोशिश करने के बाद वह ठीक नहीं होता। डा. प्रिया थकी-सी महसूस करती है तो प्रभाकर उसे अपने माँ और पिताजी से मिलकर आओ ऐसी सलाह देता है तो प्रिया चिण्टू की बीमारी की, देखभाल का प्रश्न उठाती है तब प्रभाकर उसे कहता है कि , "चिण्टू क्या सिर्फ तुम्हारा ही है।"[2]

पति-पत्नी की स्वाभाविक-सी झोक कब इतनी कड़वी होती है कि दोनों एक-दूसरे को दुश्मन समझने लगते हैं। प्रभाकर का स्पर्श भी प्रिया को खीज और गुस्से से भरने लगता है। दोनों अलग-अलग कमरे में रहते हैं। दोनों एक-दूसरे का मूँह तक नहीं देखते।

4.1.3 विवाह की समस्या -

परिवार मानव समाज की एक आधारभूत इकाई है। यह स्त्री-पुरुष के अत्यावश्यक संबंधों पर आधारित है। अतः स्त्री-पुरुष के पारस्परिक संबंधों के लिए प्रत्येक समाज में कोई-न-कोई

संस्थापक व्यवस्था होती है। विवाह इसी संस्था का एक मान्य स्वरूप है। अन्य शब्दों में विवाह यौन संबंधों को स्थापित करने का एक सामाजिक और सांस्कृतिक रूप है। तत्कालीन समाज में विवाह रूढ़ि परंपरागत पद्धति से होते थे, परिवार के बुजुर्ग अपने बच्चों के विवाह के लिए सम्मति लेना जरूरी नहीं मानते थे। लड़का तथा लड़की देखने के लिए प्रायः घर का मुखिया जाता था। वर्तमान युग में विवाह पद्धति में परिवर्तन आया है।

'फिलहाल' कहानी में विवाह की समस्या को उठाया है। कहानी की नायिका आरती एक स्कूल शिक्षिका के पद पर नौकरी करती है। सुबह से श्याम तक यंत्रवत काम करके अपनी अंधी माँ और बीमार बहन को सँभालती है। सुबह आठ से पाँच बजे तक की नौकरी करके घर आकर घर का सब काम अकेले ही करती है। कुछ दिन नौकरानी रखती है, लेकिन वह तीन जनों का महिने भर का राशन पंद्रह दिनों में ही समाप्त करती है।

आरती के दो भाई होकर भी कुछ फायदा नहीं है। छोटा भाई राजन अपने पत्नी के साथ अलग रहता है। आरती की उम्र करीब तीस साल की हुई है फिर भी वह शादी के बारे में नहीं सोचती। एक दिन आरती की मुलाकात जय नामक युवक से होती है। जय आरती से शादी करके घर बसाना चाहता है। लेकिन आरती माँ और बहन की जिम्मेदारी के वास्ते सोच-विचार करके बताऊँगी ऐसा जय को कहती है।

आरती अपने भाई और भाभी को जय और उसकी शादी के बारे में कहती है। भैया कुछ न बोलकर चला जाता है। भाभी भी व्यंग्यात्मक भाव से टोककर आरती को कहती है - ''हाँ और क्या कोई विवाह के लिए तैयार है तो कितना अच्छा। जीजी का संसार देखने का हमें भी तो शौक है। समय पर शादी हो गई होती तो अभी तक बच्चे भी पलकर बड़े हो गए होते।''[3]

आरती खुश होकर दूसरे दिन जय के ऑफिस में फोन करती है तो उसे मालूम पड़ता है कि जय का तबादला हुआ है। वह हमेशा के लिए नागपुर चला गया है। आरती नाराज होकर फोन बंद करती है। आरती अंत तक कुंवारी रहती है। विवाह न करके अपनी माँ और बीमार बहन की सेवा करती है।

'सच और सच का फासला' कहानी में नायिका प्रेमा और उसकी बहनों के विवाह की समस्या को चित्रित किया है। प्रेमा की एक बहन शादी-शुदा है। बड़ी बहन स्कूल में पढ़ाती है। उन्होंने तो शादी की उम्मीद ही छोड़ी है। मुहल्लेवाले उसे जवान बुढ़िया कहते हैं। तीसरी शादी के इंतजार में बैठी है। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उनकी शादी नहीं होती। वह तो शादी न होने के कारण आत्महत्या करने तक सोचती है। इस कहानी में प्रेमा की बहनों को गरीबी के कारण कुँवारी ही रहना पड़ता है।

4.1.4 नारी समस्या -

नारी समाज़ का महत्त्वपूर्ण अंग है। किसी भी समाज की श्रेष्ठता का निर्णय मुख्यत: समाज में नारी की स्थिति पर निर्भर रहता है। प्राचीन धर्मशास्त्र ने उस पर अनेक निबंध लगाएँ थे। नारी का जीवन एक अभिशाप माना जाता है। समाज तथा परिवार में नारी को पुरुषों की तुलना में हेय समझा गया। लड़के की पैदाइश पर जहाँ प्रसन्नता प्रकट की जाती थी, वहाँ लड़की पैदा होने पर हंगामा मच जाता था। परिवार में लड़के की तुलना में लड़की को कम प्यार मिलता है। अत: बचपन से ही उसमें हीनग्रंथी उत्पन्न होती हैं और वह जीवन भर अत्याचारों की चूपचाप सहती है।

महेंद्रकुमार जैन ने नारी समस्या को बड़े ही उचित शब्दों में व्याख्याचित किया है। उनके अनुसार - ''भारतीय समाज में शताब्दियों से उपेक्षित नारी पुरुष के अत्याचार से पीड़ित रही। उसके स्वतंत्र अस्तित्व की किसी को कल्पना तक नहीं। निर्जीव पदार्थों के समान उसका क्रय-विक्रय हो रहा। वह असमर्थ है, इसलिए वह अत्याचार सहती रही। समाज में उसका स्थान 'भोग्यामात्र' रहा। धीरे-धीरे परिस्थिति अनुकूल पाकर नारी अपनी अलग पहचान बनाती गई। आज समाज में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है।''[4]

इस बदलते समाज में नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। पुरातन काल से नारी समस्या का प्रमुख कारण प्राय: आर्थिक पराधीनता था। वर्तमान काल में नारी शिक्षा का प्रचार होने के कारण आज नारी भी पुरुष के कंधे-से-कंधा मिलाकर नौकरी करती है। उसकी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। फिर भी पुरुष प्रधान समाज-व्यवस्था के कारण नारी समस्या जटिल बनती गई। आधुनिक युवा

लेखिकाओं/साहित्यकारों ने आज की नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को बड़ी गहराई से चित्रित किया है।

चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में पढ़ी-लिखी अभिजात वर्ग की मध्यवर्ग की, नारियों की समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई है। आज चाहे पढ़ी-लिखी कामकाजी महिला हो या घर की चार दिवारी में रहनेवाली नारी हो, सभी वर्ग की नारियों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में नारी समस्याओं को चित्रित किया है।

'फिलहाल' कहानी की नायिका के सामने अनेक समस्या हैं। नायिका आरती उम्र के तीस साल पूरे हो चुकने पर भी उसकी शादी नहीं होती। अंत तक कुँवारी रहकर अपनी अंधी माँ और बीमार बहन की सेवाएँ करती है।

उसका भाई राजन जब तक शादी नहीं होती तब तक घर में रहता है, लेकिन शादी होने के बाद अपनी पत्नी के साथ अलग रहता है। वह अपनी माँ और बीमार बहन को नहीं संभालता। आरती जी-तोड़कर आठ से पाँच तक की नौकरी करके घर वापस आकर घर का सारा काम करती है। आरती नौकरी करनेवाली औरत होकर भी व्यस्त रहती है। विवाह नहीं करती। अपनी माँ और बहन के लिए कुँवारापन स्वीकार करती है।

'धराशायी' कहानी की नायिका अपना संघर्ष-पूर्ण जीवन बिताती है। नायिका वी. वी. अपने काम में सदा सतर्क रहनेवाली युवती है। वी. वी. पन्नालाल ट्रेड़र्स कंपनी के ऑफिस में काम करती है। कंपनी के मालिक सत्याग्रही साहब जो अपनी प्रशंसा करते हैं, उसकी पदोन्नति करते हैं। वी. वी. सब से सीनियर होकर भी उसकी पदोन्नति नहीं होती तब वी. वी. सत्याग्रही साहब के खिलाफ आवाज़ उठाती है। युनियन के नेताओं के साथ मिलकर हड़ताल-उपोषण करती है। लेकिन उसके सहयोगी कर्मचारी अंत तक उसे साथ नहीं देते। फिर भी वह अकेली सत्याग्रही साहब के विरूद्ध लड़ती है। वी. वी. जैसे पात्रों के माध्यम से चंद्रकांता ने आज नारी अन्याय के विरूद्ध लड़ रही है, आवाज़ उठा रही है, इसका यथार्थ चित्रण किया है।

'नूराबाई' कहानी की नायिका नूरा एक मध्यवर्गीय परिवार में रहनेवाली गरीब औरत है। उसका पति सूफी शराब और वेश्या के पास जाने के कारण बीमार पड़ता है। अब घर चलाने का दायित्व उस पर पड़ता है। वह जी-तोड़ मेहनत कर घर चलाती है। लेकिन उसके पति का मित्र जद्देशाह उसकी इज्जत लूटता है। वह कुछ नहीं कर सकती। जद्देशाह उसे मिल में नौकरी दिलवाता है। सेठ के यहाँ वह नौकरी करती है। एक दिन नूरा बीमार पड़ने के कारण सेठ नूरा को अपनी बेटी हसीना को काम पर भेजकर आराम करने की सलाह देता है। नूरा भी सेठ के बहकावे में आकर हसीना को काम पर भेज देती है। उसी दिन सेठ हसीना पर बलात्कार करता है। नूरा जवाब पूछने जाती है तब सेठ पुलिस के नाम से उसे डराता है और पचास की नोट जेब से निकालकर देता है। तब नूराबाई बेबस सर्पिणी-सी फुंकारते नोट सेठानी के मुँह पर फेंककर कहती है - "ये नोट देना अपनी कोखजायी को। हम गरीबों की कीमत इतनी जादा नहीं।"[5]

सेठ के ऊपर थूंककर नूराबाई घर लौट आती है। जद्देशाह भी एक दिन नूरा को बस स्टाप पर मिलने बुलाता है, लेकिन खुद नहीं आता। नूरा के घर जाकर हसीना पर बलात्कार करता है। जब नूरा यह अपनी आँखों से देखती है तो कहती है - "जद्दे, तू उसके बाप की जगह पर था। तुझे खुदा भी माफ नहीं कर सकता।"[6]

नूरा यह कहकर लोहे की भारी ओखली उठाकर मार के उसका खून करती है। गरीब औरत और उसकी बेटी पर अत्याचार करनेवाले लोगों का यथार्थ चित्रण लेखिका ने किया है।

'दहलीज पर न्याय' कहानी की नायिका रूक्की को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। रूक्की को जब बच्चा होता है तब से उसे समस्याएँ घेर लेती हैं। गाँव का महंत उसके बेटे की बली देना चाहता है। इसीलिए वह भागकर पुलिसथाना जाती है। लेकिन जो आदमी की रक्षा करनेवाले पुलिस ही भक्षक बन जाते हैं। रूक्की पर पुलिसवाले ही अत्याचार करते हैं। वहाँ से भागकर रूक्की दूसरे गाँव जाती है। वहाँ सरदार अत्तरसिंह के घर रहती है। वहाँ जो कुछ काम मिले, वह करती है। सरदार अत्तरसिंह और सरदारनी उसे अच्छी तरह सँभालते हैं। एक दिन सरदारनी कुछ काम के लिए अपने मायके जाती है। तब सरदार अत्तरसिंह रूक्की को अकेली पाकर उसकी इज्जत लूटने की

कोशिश करता है। लेकिन रूक्की हिम्मत नहीं हारती। सरदार अत्तरसिंह का सामना करके उसके हाथ से छूट जाती है। रूक्की हर एक समस्या को, अत्याचार को निपटकर, संघर्षकर जीवन जीती है।

4.1.5 दहेज समस्या -

दहेज समस्या समाज में बहुत ही भयावह रूप धारण कर रही है। इस प्रथा के कारण गरीब तथा मध्यवर्ग के लोगों को आर्थिक दृष्टि से तकलीफ उठानी पड़ती है। वर पक्ष विवाह में वधू पक्ष से रुपए / पैसों तथा दहेज के रूप में गृहपयोगी वस्तुओं की माँग करता है। वधू पक्ष की स्थिति अगर देने लायक नहीं होती तो भी स्त्री पर जुल्म-जबरदस्ती करके इसे प्राप्त करने की प्रवृत्ति समाज में आज बढ़ गई है। सामाजिक दहेज समस्या ने अमानवीय रूप धारण किया है। इस समस्या को दूर करने के लिए कानूनी तौर पर प्रतिबंध लगाए हुए हैं। परंतु जन-साधारण के सिवा इस समस्या का मुकाबला करना मुमकिन नहीं ऐसा दिखाई देता है।

'सच और सच का फासला' कहानी में चंद्रकांता ने दहेज की विकराल समस्या का चित्रण किया है। कहानी की नायिका प्रेमा बेहद सुंदर है। वह मोती नामक लड़के से प्यार भी करती है। मोती भी प्रेमा के साथ शादी करना चाहता है। लेकिन मोती की माँ दहेज के लालच में मोती न चाहते हुए भी उसका विवाह निकी नामक लड़की के साथ करना चाहती है।

मोती की माँ जान-बुझकर प्रेमा को कहती है कि, ''बिटिया यह मोती शादी करने से फिलहाल मना करता है। मैंने इसके लिए चीफ इंजीनियर लालजी साहब की निकी पसंद की है, बड़ा अच्छा घर है, यह घर हाथ से जाएगा तो उम्र भर पछताता रहेगा। वे लोग फियेट कार भी दे रहे हैं मोती के लिए।''[7]

मोती की पसंद या चाहत को न देखे उसकी माँ दहेज के लालच में अपने बेटे का विवाह करना चाहती है। प्रेमा और मोती एक-दूसरे को चाहते हुए भी शादी नहीं कर पाते। दहेज के कारण प्रेमा की शादी नहीं होती। लेखिका ने दहेज के कारण शादी में आनेवाली बाधाओं का चित्रण इस कहानी में किया है।

4.1.6 आंतर्जातीय विवाह की समस्या -

आंतर्जातीय विवाह को मान्यता देने के लिए माता-पिता आज भी झिझकते हैं। परंपरागत लकीर को तोड़ना उन्हें असंभव हो जाता है। यद्यपि सरकार द्वारा ऐसे विवाहों को प्रेरणा दी जाती है, फिर भी समाज ऐसे विवाह से घृणा करता है। आंतर्जातीय विवाह करनेवाले स्त्री-पुरुष समाज में निंदा के विषय बन जाते हैं। परंतु आज इस दिशा में बहुत कुछ युवक-युवतियाँ कदम उठाने का साहस दिखा रहे हैं।

'अनार के फूल' कहानी में नीरा और नसीर आंतर्जातीय विवाह करते हैं। नीरा मुसलमान युवक नसीर के साथ शादी करती है। नीरा हिंदू होने के कारण उसके घरवाले तो उसकी शादी नहीं कर देना चाहते। नसीर की माँ भी नसीर को अपने ही जमात की लड़की से शादी करने की सलाह देती है।

नीरा सुंदर, जिम्मेदार एवं शिक्षित लड़की है। वह नौकरी भी करती है। दोनों को काफी विरोध होने के बावजूद भी वह विवाह बद्ध होते हैं। नीरा शादी होने के बाद जब नसीर के घर में जाती है तब नसीर की माँ अपने समाज में जो रीति-रस्म, नियम हैं वह सीखना पड़ेगा, यह कहके सताती है और कहती है कि, ''कुरआन शरीफ सीखना होगा, नीरा से नूरी बनना होगा, बुर्का न भी पहनों, मगर मुँह उघाड़कर पराए मर्दों से रू-ब-रू होना नहीं चलेगा।''[8]

नसीर की माँ नीरा को हर वक्त डाँटती है। शादी के बाद नीरा को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। लेखिका ने आंतर्जातीय विवाह करने के बाद कितनी समस्याएँ आती हैं इसका चित्रण नीरा के माध्यम से किया है।

'सच और सच का फासला' कहानी की नायिका बेहद सुंदर लड़की है। गरीबी के कारण उसकी शादी नहीं होती। उसकी दो बड़ी बहनें अभी तक कुँवारी ही हैं। इसी कारण प्रेमा नाराज होती है। प्रेमा सुंदर होने के कारण लोग प्रेमा को ही पसंद करते हैं। इसी कारण वह किसी अन्य जाति के काका नामक लड़के साथ भागकर शादी करती है। लेकिन उनके घरवालों को समाज के ताने खाने पड़ते हैं। लेखिका ने विवेच्य कहानियों में आंतर्जातीय विवाह की समस्याओं का चित्रण किया है।

4.1.7 *दिखावटी प्रेम की समस्या -*

प्रेम यह परिकल्पना व्यापक है। एक दूसरे के प्रति प्रेम का आकर्षण, जात-पाँत, उच्च-नीच समान का विरोध सभी लाँघकर विवाह के पवित्र बंधन में बाँध देता है। विवाहपूर्व प्रेम में जिम्मेदारी का अभाव और उन्मुक्तता अधिक दिखाई देती है। उन्मुक्त प्रेम करनेवाले प्रेमी केवल सौंदर्य तथा यौवन से प्रेम करते हैं। उनमें हार्दिक प्रेम नहीं होता। ऐसा प्रेम पारिवारिक स्वास्थ्य के लिए घातक होता है। धर्म जाति-पाँति तथा धन का अभिमान आदि का संबंध में भारतीय समाज में अभिरूढ़िवादिता बहुत बड़े पैमाने पर है। ऐसी अवस्था धर्म, जाति-पाँति का विचार न करनेवाले युवक-युवतियों के जीवन में समस्याएँ पैदा करता है। लेखिका ने निम्नांकित कहानियों में दिखावटी प्रेम का चित्रण किया है।

'एक लड़की शिल्पी' कहानी की नायिका शिल्पी बहुत महत्वाकांक्षी लड़की है। इंजीनियर होना चाहती है। माँ-पिताजी उसकी शादी करना चाहते हैं, लेकिन शिल्पी प्रेम और शादी को लड़की की जिंदगी के हाद से भर समझाती है।

शिल्पी जब कॉलेज में जाती है तब अमित कुमार नामक अपने सहपाठी के प्यार में फँस जाती है। अमित भी दिखने में अच्छा-खासा है। उसी दिन शिल्पी के मौसा का उस शहर में तबादला होता है। शिल्पी छुट्टी के दिन मौसी के हाथ का खाना खाने मौसी के घर जाती है। अमित भी उसे मौसी के घर छोड़ने जाता है और लेकर भी आता है। धीरे-धीरे शिल्पी मौसी के घर जाना बंद करती है। अमित के साथ होटल में जाती है।

शिल्पी और अमित एक-दूसरे से बेहद प्यार करते थे, शादी भी करना चाहते थे। लेकिन कुछ दिनों बाद अमित बदल जाता है। शिल्पी अमित के सामने शादी करने का प्रस्ताव रखती है। अमित उसके साथ शादी नहीं करता। उपर से कहता है - ''इतनी जल्दी किस लिए साथ तो हम है ही। एक छत्र के नीचे न सही फिर बंधन की क्या जरूरत है ? मेरी कई योजनाएँ हैं। नहीं नहीं शादी नहीं .... मैं किसी बंधन में नहीं पड़ूँगा।''[9]

अमित शिल्पी से शादी करने के लिए राजी नहीं होता। अमित किसी डा. सुलक्षणाराव नामक लड़की से शादी करता है। अमित शिल्पी को धोखा देता है। अंत में शिल्पी किसी वसंत नामक लड़के से शादी करके अपना जीवन बीताती है।

'बात ही कुछ और' कहानी का कथ्य 'एक लड़की शिल्पी' से मिलता-जुलता है। इस कहानी की नायिका सुहानी भी प्रेम में पागल होकर अंत में ठोकर खाती है। सुहानी भी इंजीनियरिंग में पढ़ती है। शहर में अकेली रहती है। कुछ दिन तो अपनी पढ़ाई में व्यस्त रहती है। कहानी का नायक जतीन सुहानी का सहपाठी है। कुछ दिनों बाद उनकी मुलाकात होती है। धीरे-धीरे मुलाकात प्यार में बदल जाती है। दोनों एक-दूसरे से बेहद प्यार करते हैं। सुहानी जतीन से शादी करना चाहती है। जतीन नौकरी भी करता है। परंतु एक जगह कहीं भी नहीं रहता। हर महिने अलग-अलग फर्म में नौकरी करता है।

जतीन अमरिका जाना चाहता है। वह अपना पासपोर्ट तैयार करता है। अमरिका जाने से पहले वह सुहानी से मिलकर अमरिका जा रहा हूँ ऐसा कहता है, तब सुहानी शादी करके चले जाएंगे ऐसा कहती है। जतीन शादी से इन्कार करता है और कहता है - ''हमारे बीच अच्छा बुरा मानने का सवाल ही कहाँ उठता है सू ! हमारे बीच जो भी है, साझा है, सुख-दुख सही-गलत बस। एक बात जरूर है कि मैं अभी कोई फैसला नहीं करना चाहता। शादी नाम से ही बँधने की गंध आती है। मुझे लगता है शादी आदमी का उसकी आत्मकांक्षाओं का अंत है।''[10]

जतीन शादी करने के वादे करके भी सुहानी को धोखा देता है। सुहानी प्रेम में पागल होकर दर-दर की ठोकरे खाती है। अंत में अपने विवाह का सब हक अपने माता-पिता पर सौंप देती है।

4.1.8 असफल प्रेम की समस्या -

आज बहुत सारे युवा प्रेमी एक तरफा प्रेम में पागल होकर अपनी जान तक गवाँ बैठते हैं। प्रेम में असफल होने पर युवक और युवतियाँ अपना जीवन बरबाद कर रहे हैं। इसका यथार्थ चित्रण लेखिका ने किया है।

'बावजूद इसके' कहानी का नायक शरद और नायिका नंदी है। शरद नंदी की सोलह साल की अवस्था से उसके पीछे पड़ता है। शरद और नंदी धीरे-धीरे प्यार में फँस जाते हैं। दोनों अनेक सपने देखते हैं। शादी करके साथ-साथ रहेंगे और अपना जीवन बितायेंगे। परंतु उनके सपनों का महल बीच में ही टूटता है। शरद कुछ दिनों बाद विदेश चला जाता है। नंदी के घरवाले उसकी शादी करते हैं।

बहुत दिनों के बाद नंदी और शरद की मुलाकात होती है। दोनों देखकर खुश होते हैं। लेकिन मन-ही-मन दोनों नाराज दिखाई देते हैं। दोनों कुछ बातें करके घर चले जाते हैं। शरद दु:खी होकर दूसरे दिन विदेश चला जाता है।

'एक अध्याय का अंत' इस कहानी में भी असफल प्रेम का चित्रण किया है। कहानी का नायक देवदत्त माथूर भारत मशीन टूल्स में असिस्टेंट फोरमैन के पद पर काम करता है। कहानी की नायिका विभा शर्मा भी नौकरी करती है। उसकी मुलाकात देवदत्त माथुर से होती है। पहली ही मुलाकात में वह देवदत्त के प्यार में पागल होती है।

विभा देवदत्त से बहुत चाहती है। लेकिन देवदत्त अपने ही काम में व्यस्त रहता है। पहले कुछ दिन विभा के साथ होटलों में खाना खाने, सिनेमा देखने, घूमने जाता है। फिर बाद में उसे नहीं मिलता। विभा उसे हर समय मिलना चाहती है। लेकिन देवदत्त नहीं मिलता। एक दिन देवदत्त विभा को मिलने के लिए बुलाता है। कुछ काम निकलने से वह उसे मिलने नहीं जा सकता। विभा देर तक उसकी राह देखती है। शाम तक देवदत्त की राह देखकर घर वापस जाती है और मन ही मन में कहती है - ''हो सकता है कि तुम्हें इस बार याद भी न रहा हो कि मैं घंटों तुम्हारी प्रतीक्षा में रीगल की भीड़ का दबाव झेलती, सभी बेहूदा विश्वासों की अंत्येष्टी करके घर लौटती हूँ, क्योंकि तुम्हारे विशिष्ट मूड़ और सुविधाओं पर टिकी इन मुलाकातों में मुझे आदिम पुरुष की फितरत की बासी गंध आने लगी है और इस सड़ी हुई गंध को सहना मेरे बुते का नहीं है।''[11]

विभा शर्मा अंत तक मायूर (देवदत्त) का प्यार नहीं पाती। अंत में नाराज होकर घर जाती है और अपने असफल प्रेम पर पछतावा करती है।

4.1.9 अकेलेपन की समस्या -

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए तथा अपने सगे-संबंधियों के होते हुए भी मानसिक तनाव के कारण मनुष्य कभी-कभी अकेलापन महसूस करता है। परिस्थिति के दबाव में आकर उसमें घुटन-सी पैदा होती है। महानगरीय परिवेश में यह अकेलेपन की समस्या विक्राल रूप

धारण किए हुए है। भीड़ में होकर भी मनुष्य अपने-आप को अकेला महसूस करता है। चंद्रकांता ने कुछ कहानियों में अकेलेपन की समस्या को रेखांकित किया है।

'नानी तुम ?' कहानी की नायिका डॉ. प्रिया अमरिका में एम्. डी. करने के बाद वहीं नौकरी करती है। प्रभाकर नामक युवक से प्रेम-विवाह करती है। सालभर ठीक-ठाक चलता है। बाद में जब उन्हें संतान होती है तब से उन दोनों में संघर्ष होता है। बच्चा जन्म से ही दिल का मरीज़ था। काफी कोशिशों के बावजूद भी ठीक नहीं होता। तब दोनों परेशान रहते हैं। बच्चे के कारण ही उनमें संघर्ष निर्माण होता है। दोनों अलग-अलग रहते हैं। तब प्रिया अकेलापन महसूस करती है। अपना अकेलापन दूर करने के लिए प्रभाकर के मित्र करण से मिलती है, फोन करती है। उसके साथ होटल जाती है। अकेलेपन के कारण पति-पत्नी निराश रहते हैं।

'मोह' कहानी की नायिका बूढ़ी गुणी है। गुणी के तीन बेटे हैं। तीनों बेटे शहर में नौकरी करते हैं। गुणी को अपने गाँव के प्रति मोह है। उसे गाँव छूटने का दर्द होता है। गुणी को बेटे शहर लेकर जाना चाहते हैं। लेकिन गुणी गाँव नहीं छोड़ती। गुणी अकेली ही घर में रहती है। गुणी सब कुछ होते हुए भी अकेलापन महसूस करती है।

गुणी अकेली रहकर घर का सब काम देखती है। बेटे माँ बूढ़ी होने के कारण उन्हें अपने पास रखना चाहते हैं। लेकिन गुणी किसी का एक नहीं सुनती और अकेली ही रहकर अकेलापन महसूस करती है।

'नौवें दशक की दोस्ती' कहानी की नायिका मधुरिमा एक भरे-पुरे परिवार में रहती है। घर में पति है, दो बच्चे हैं। फिर भी वह अकेलापन महसूस करती है। बच्चे बड़े होने के कारण होस्टल में रहते हैं। वहीं पढ़ाई करते हैं। मधुरिमा का पति भी अपने काम में व्यस्त रहता है। घर में वह अकेली ही रहती है। तब अकेलापन दूर करने के लिए वायलिन बजाना, पत्रकारिता आदि में समय बिताती है। कहानी का नायक सुरेश भी उसके जीवन में आता है। दोस्ती करता है। फिर बाद में उसे

भूल जाता है। लेकिन मधुरिमा एक जिम्मेदार पत्नी, माँ, गृहिणी थी। साथ-ही-साथ उसके अपने शौक थे, हाबियाँ थी, इस सबके बावजूद भी वह अकेलापन महसूस करती है।

जब वह अकेलेपन में खो जाती है, तब उसका पति उसे कहता है, "अकेलापन ? मानसिक प्रक्रिया है, यह दरअसल तुम चीजों को जरूरत से ज्यादा महत्त्व देती हो। दूसरे को उसका दाय दो, पर उसके साथ बँध क्यों जाती हो ? मधु, यह बीसवीं सदी की सोच है।"[12]

मधु हर समय अकेलापन महसूस करती है। चंद्रकांता ने उपर्युक्त कहानियों में अकेलेपन की समस्या को चित्रित किया है।

4.1.10 अविश्वास की समस्या -

चाहे क्षेत्र कोई भी हो उसमें एक-दूसरे के प्रति विश्वास महत्त्वपूर्ण होता है। पति-पत्नी में विश्वास होना चाहिए। किंतु विवेच्य कहानियों में वर्तमान परिवेश में विश्वास की जगह अविश्वास किस तरह आ गया है। इसका चित्रण किया है।

'जंगली जलेबी' कहानी की नायिका लक्ष्मी अपने पति का विश्वास खो देती है। लक्ष्मी का पति गणेशी किसी दप्तर में काम करता है। वह देहात से आया गरीब दांपत्य है। जिनका विवाह अभी-अभी हुआ है। गणेशी दफ्तर जाने के बाद लक्ष्मी अकेली ही घर में रहती है। लक्ष्मी किसी पर पुरुष को घर बुलाकर उसी के साथ समर्पित होती है। हर रोज वह उसके साथ शरीर-संबंध रखती है और अपने पति को धोखा देती है। चाहे वह विवशतावश क्यों न हो।

'नानी तुम ?' कहानी की नायिका प्रिया भी जब पति से झगड़ा होता है तब अकेली रहती है और अकेलापन महसूस करती है। अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए अपने पति के मित्र करण की ओर आकर्षित होती है। उसे अस्पताल से हर रोज फोन करती है, होटल बुलाती है। अपने मन की सब बातें करण को कहती है। अपने पति को पता तक नहीं होने देती। पति को धोखा देकर पर-पुरुष के साथ घूमती है।

'दहलीज पर न्याय' कहानी की नायिका रूक्की को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। रूक्की महंत की डर से गाँव छोड़कर दूसरे गाँव जाती है। वहाँ सरदार अत्तरसिंह के पास रहती है। सरदार अत्तरसिंह भी उसे विश्वास दिलाता है कि तुम्हें यहाँ कोई तकलिफ नहीं होगी। लेकिन जब सरदारनी अपने मायके चली जाती है तब सरदार रूक्की को अकेली पाकर उस पर बलात्कार करने की कोशिश करता है। रूक्की उसका संघर्ष कर अपनी इज्जत बचाती है।

'नूराबाई' कहानी की नायिका एक मध्यवर्गीय परिवार की नारी है। गरीबी के कारण वह दर-दर के ठोकरे खाती है। पति शराबी निकलता है। सदा बीमार रहता है। घर का खर्चा अकेली चलाती है। कठिन समय पर उसके पति का मित्र जद्देशाह उन्हें मदद करता है। जद्देशाह नूरा को भाभी कहता है। लेकिन वही जद्देशाह उस पर बलात्कार करता है, उसकी बेटी पर ही बलात्कार करता है।

कहानी का दूसरा पात्र सेठ भी नूरा को बीमार होने के कारण आराम करने कहता है और अपनी हसीना बेटी को काम पर भेज देने की सलाह देता है। सेठानी उसे कुछ काम सिखायेगी ऐसा कहता है। नूरा भी विश्वास रखकर अपनी बेटी को काम पर भेज देती है। उसी दिन सेठ हसीना पर बलात्कार करता है।

विश्वास की जगह अविश्वास ने ली है इसका चित्रण चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में किया है। अविश्वास प्रगति की दृष्टि से घातक सिद्ध हो सकता है। आज वर्तमान युग में मुल्य-विघटन नैतिकता का पतन हो रहा है और इसी कारण मानव, मानव से दूर जा रहा है। एक दूसरे से भयभीत है। उसका खुद पर विश्वास नहीं है।

4.1.11 अस्पताल की समस्या

भारतीय शासन व्यवस्था ने सामान्य जनता के लिए बहुत सुविधाएँ उपलब्ध करा दी है। परंतु उन सुविधाओं का फायदा सब लोगों को नहीं मिलता। अमीरों को ही उसका लाभ अधिक होता है। अस्पतालों में उसी प्रकार की सुविधा है, जिसकी हालत अतिशय दयनीय हो गई है।

'शिकायतें' कहानी में अस्पताल की समस्या का चित्रण किया है। कहानी का नायक दीवान बीमार पड़ने के बाद उसे अस्पताल में भर्ती किया जाता है। उसके पास उसकी पत्नी प्रभावती रहती है। लेकिन अस्पताल में कोई किसी की पर्वा नहीं करता।

दीवान का बेटा विदेश से उसे देखने आता है। अस्पताल की दूरावस्था देखकर बेचैन होता है। वह शिकायत भी करता है, लेकिन उसका कोई भी नहीं सुनता। आया से लेकर डॉक्टर तक लापरवाही बरताते हैं।

'इन्तजार बरकरार' कहानी में मृत्युशय्या पर पड़े बीमार मरीजों का चित्रण किया है। कहानी का नायक खन्ना कैंसर ग्रस्त है। पत्नी को मदद करने के लिए एक दिन सीढ़ी पर चढ़ता है। तब नीचे पड़कर कमर की नीचे की हड्डी टूटती है। उसे अस्पताल लाया जाता है। अस्पताल में उसे भर्ती करने से एक घण्टे के बाद डॉक्टर आता है। नर्स भी उसकी कोई देखभाल नहीं करती। मरीजों को घण्टे-दो-घण्टे गीले कपड़ों में रहना पड़ता है। किसी को भी कहने पर टा-मटोल देते हैं। ठीक ढंग से एक उत्तर नहीं देते। हर दिन डॉक्टर, नर्स से लेकर आया तक हड़ताल करते हैं।

डॉक्टर की कमी होती है। नर्स भी कभी-कभी नहीं आती। मरीजों की देखभाल ठीक ढंग से नहीं होती। लेखिका ने अस्पताल की समस्या का यथार्थ चित्रण किया है।

4.1.12 बाल मनोवैज्ञानिक समस्या -

बालकों के मनोविज्ञान को जानने से पहले हमें मनोविज्ञान किसे कहते हैं ? यह जान लेना आवश्यक है। इसे जाने बिना हम बाल मनोविज्ञान की परिभाषा भी नहीं कर सकते। डॉ. देवराज उपाध्याय कहते हैं, ''मानव विचारशील प्राणी है। वह सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ को जानना और समझना चाहता है, पर सबसे अधिक उसकी अभिरूची का केंद्र है मानव। मानव मानव के समानार्थी होने के कारण एक तरह की परिस्थितियों के प्रति क्रियाशील होने के कारण मानव चिंतन का सर्वाधिक अधिकारी रहा है। मानव के भाव की चिंतनात्मक और भावात्मक सत्ता पर इस सर्वाधिकार का एक कारण और भी है कि इस व्यापार के द्वारा उसे स्वयं अपने को समझने में भी सहायता मिलती है। इस प्रकार मानव के

प्रति मानव की चिंता को समझने, समझाने, देखने, बूझने के प्रयत्न को मनोविज्ञान का अध्ययन कहते हैं। इसमें मानव व्यापार, उसके क्रियाकलाप, उसके आचरण तथा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन होता है।''[13] चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में बच्चों की विवशताओं को भी चित्रित किया है।

'चुनमुन चिरैया' बच्चों के मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। कहानी का नायक सिद्धार्थ जहाज पर नौकरी करता है। माँ सुनीता अपने डेढ़ साल के बेटे चुनमुन को नानी उमा के पास छोड़कर दो माह के लिए समुद्री जहाज पर नौकरी करनेवाले अपने पति कप्तान सिद्धार्थ के पास चली जाती है। नानी और अन्य लोगों को विश्वास था कि चुनमुन जैसे पहले परिवार में दूसरे सदस्य के साथ घुल-मिलकर रहता था, वैसे ही अब भी भूला रहेगा। किंतु चुनमुन अब किसी भी भुलावे में नहीं आता और माँ सुनीता और पिता सिद्धार्थ को याद करता दु:खी होता है।

नानी उमा चुनमुन को हर तरह से खिलौने देकर, बाहर घूमाने ले जाने का वादा करके मनाना चाहती है। लेकिन चुनमुन माँ और पिता की अलबम से फोटो निकालकर चुम्मा लेता है और रोता है। चुनमुन के बाल मन पर पिता और माँ का बहुत असर होता है। वह उनकी यादों में खोया-सा रहता है। दुखी होता और खिसकियाँ भरता किसी तरह से सो जाता है। चंद्रकांता ने 'चुनमुन चिरैया' कहानी के माध्यम से बाल-मनोविज्ञान का चित्रण किया है।

4.2 आर्थिक समस्याएँ -

जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान 'अर्थ' का है। प्रत्येक युग का सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन आर्थिक मूल्यों से प्रभावित रहा है। आर्थिक मूल्यों पर ही समाज का विकास आधारित है। सामाजिक परिपार्श्व में विभिन्न विषमताओं का कारण यही मूल्य है। विभिन्न सामाजिक संघर्ष प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप में आर्थिक वैषम्य से ही संबंध रखते हैं। आर्थिक वैषम्य से ही वर्ग भावना का उदय होता है। आज कल धन ही जीवन का मानदंड़ बना है। स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी, पिता-पुत्र के संबंधों में अर्थ दृष्टि ने नया मानदंड़ खड़ा कर दिया है। पैसे के सामने सारे रिश्ते-नाते झूठे नजर आते हैं।

आज अर्थ पर आधारित समाज की संरचना बन गई है। किसी भी समाज का परिदृश्य मुख्यतः आर्थिक कारण से ही संचालित होता है। अर्थ और अर्थ व्यवस्था आज अधूरी बन गई है , जिसके द्‌वारा समाज के व्यवहार, संबंध, रिश्ते आदि सभी कुछ निर्धारित होते हैं। अर्थ के कारण ही समाज में तीन वर्ग बन गए हैं। उच्च वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग। आधुनिक युग में कुछ लेखकों ने आर्थिक समस्या को केंद्र मानकर लेखन किया है। आर्थिक समस्या के अंतर्गत निम्न वर्ग, मध्य वर्ग और उच्च वर्ग की आर्थिक स्थिति को लिया जाता है। उसके साथ-साथ बेकारी की समस्या, गरीबी आदि का अंतर्भाव होता है। अर्थाजन की समस्या, आर्थिक विषमता के कारण वर्ग भेद की समस्या, अर्थ लोलुपता की समस्या इसके उपभेद हैं। चंद्रकांता ने आर्थिक समस्या के अंतर्गत बेकारी की समस्या, नौकरी की समस्या, भूख की समस्या का चित्रण किया है। चंद्रकांता ने वर्तमान जीवन की आर्थिक समस्या को बहुत-सी कहानियों में अंकित किया है।

4.2.1 बेकारी की समस्या -

मनुष्य जीवन में बेकारी की समस्या उग्र रूप धारण कर रही है। डा. अर्जुन चव्हाण जी के अनुसार "वर्तमान काल में उच्च शिक्षित युवक युवतियों की प्रमुख समस्या है नौकरी। दुनिया में अब तक ऐसा कोई विश्वविद्‌यालय निर्माण नहीं हुआ जो उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् नौकरी देने की गैरंटी देता है। विश्वविद्‌यालय केवल उपाधि मात्र देते रहते हैं, नौकरी तो छात्रों को स्वयं प्राप्त करनी पड़ती है। वर्तमान काल की कटु सच्चाई यह है कि उपाधि प्राप्त करने के बाद छात्र जब प्रत्यक्ष जीवन में प्रवेश करता है तो सर्व प्रथम उसे बेकारी की लड़ाई-लड़नी पड़ती है।"[14]

मनुष जीवन में भूख सबसे बड़ी समस्या है। उस समस्या का हल करने के लिए मनुष्य अंतिम साँस तक कोशिश करता है। चाहे वह सही-गलत रास्ते से क्यों न हो। चंद्रकांता ने विवेच्य कहानियों में बेकारी / बेरोजगारी की समस्या का चित्रण किया है।

'सूरज उगने तक' कहानी का नायक विमल निम्न मध्यवर्गीय परिवार का पढ़ा-लिखा लड़का है। वह विश्वविद्‌यालय में प्रथम आता है। पिताजी सरकारी लोन लेकर लड़के को इंजीनियर बनाते हैं। पहली बार तो नौकरी मिलती है। लेकिन भ्रष्ट वरिष्ठ अधिकारों के विरूद्‌ध आवाज उठाने से

उसे नौकरी से निकाला जाता है। वह बेकार ही रहता है। उसे दूसरी ओर कहीं नौकरी नहीं मिलती। नौकरी की तलाश में उसे दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती हैं।

'पापा तो बस' कहानी का नायक रमाकांत संयुक्त परिवार का जिम्मेदार लड़का है। उसकी उम्र चौबीस-पच्चीस साल की है। तीन साल पहले बी. ए. कर चुका है। तब से नौकरी की तलाश में भटक रहा है। फिर भी उसे नौकरी नहीं मिलती। कुछ बच्चों को पढ़ाकर घर का खर्चा चलाता है। एक दिन शहर में इंटरव्यु के लिए जाता है। उस समय उसे घर वापस आने के लिए कुछ पैसों की जरूरत पड़ती है। तब वह मिसेज डी. के. के यहाँ पैसे माँगने जाता है। मिसेज डी. के. के नौकर उसे धक्के मारकर घर से बाहर निकालते हैं। बेकारी के कारण, बेरोजगारी के कारण वह नौकरी ढूँढ़ने जाता है। लेकिन उसे नौकरी के बजाय मार-पीट खानी पड़ती है। लेखिका ने पढ़े-लिखे बेकार युवकों की समस्याओं को चित्रित किया है।

4.2.2 गरीबी / भूख की समस्या -

रोटी, कपड़ा और मकान ये तीन बातें इंसान की प्राथमिक अत्यावश्यकताएँ हैं। आदिम युग में आदमी वस्त्र और आवास की जरूरत को जैसे-तैसे पेड़-पौधों के पत्ते तथा झाड़-फूस से काम चला लेता था। जैसे-जैसे युवा परिवर्तित होता गया वैसे-वैसे आदमी ने अपने आप में अनुभूति को साक्षी मानकर नवीन अन्वेषणों को ढूँढ़ निकाला और युग की माँग को पहचान कर सभी क्षेत्रों में काफी परिवर्तन किया। रोटी तो आदमी की महत्त्वपूर्ण जरूरत है और वह सीधी उसके जीवन में महत्त्व रखती है। उसके बिना कोई भी प्राणी जिंदा नहीं रह सकता। वर्तमान परिस्थिति में रोटी भूख के रूप में समस्या बनकर आयी है। कई अनाथ बालक तथा लोग भूख की समस्या के शिकार होने की वजह से अपने प्राण तक गँवा देते हैं। आज भूख समस्या ने भयंकर रूप धारण कर लिया है। इसका मूल कारण है, बढ़ती हुई आबादी और उत्पादनों में दिनों-दिन बढ़ती गिरावट। भूख के सामने लोग रिश्ता-नाता तक भूल जाते हैं।

'जंगली जलेबी' कहानी की नायिका लक्ष्मी अपने पति के साथ शहर में आती है। वे ज्योति शर्मा के मकान में रहते हैं। गणेशी शहर में किसी दफ्तर में नौकरी करता है। लक्ष्मी पति दफ्तर जाने के बाद किसी पर-पुरुष को अपने घर बुलाकर उसी के साथ समर्पित होती है। वह अनैतिक संबंध रखती है। हर रोज दोपहर वह आदमी लक्ष्मी के घर आता है। ज्योति शर्मा यह देखकर लक्ष्मी को समझाती है और गणेशी को कहती है। गणेशी लक्ष्मी को मार-पीट करता है। तब लक्ष्मी क्रोधित होकर कहती है - ''हाँ करता है, हम गंदा काम, जाकर बोल दो, हमको परवा नहीं। सभीच करता, हम भी करता, वो बड़े लोग हैं, वो क्या करता हमकू मालूम नई ? हम पेट के वास्ते करता, वो मौज-मजा के लिए करता।''[15]

लक्ष्मी पेट के लिए शरीर बेचती है। गंदा काम करती है। गरीब स्त्रियों को पेट की आग बुझाने के लिए शरीर बेचना पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण उपर्युक्त कहानी में किया है।

'मुक्ति-प्रसंग' कहानी में गरीब भीखमंगे लोगों का चित्रण किया है। बेटे पिताजी का श्राद्ध करने गंगा घाट पर आते हैं। पिताजी की आत्मा को शांति मिले इस उद्देश्य से श्राद्ध करते हैं। दो-सौ जनों के लिए हलवा-पुड़ी, सब्जी का प्रबंध करते हैं। कुछ तो मिलेगा, इस आशा से गरीब लोग और भीखमंगे वहाँ आते हैं। पुड़ी सब्जी पर गिद्धों की तरह टूट पड़ते हैं। शोर ज्यादा होने पर मुख्य पण्ड़ों से उन्हें धमकाया जाता है। भीखमंगे ज्यादा से ज्यादा पेट में ठूसने उतावले होते हैं। हड़बड़ी के कारण किसी के हलक में पुड़ी अटक जाती है। किसी को धसका लगता है। फिर भी उनके पेट में जो गहरा गढ़ा है वह नहीं भरता। जब भीखमंगों से यजमानों को तकलिफ होती है तो पण्ड़ा कहता है - ''आप लोग चलिए, कुछ मुँह में डालिए, दूध, फल, यह काम हम पर छोड़िए इन छोटे लोगों से निपटना आपके बस का नहीं।''[16] गरीब भीखमंगों को पेट की आग बुझाने के लिए डाँट, मार-पीट खानी पड़ती है। लेखिका ने उपर्युक्त कहानी में भीखमंगे की करूण दशा का चित्रण किया है।

'प्यारिया तो बौरा गया' कहानी का नायक प्यारिया निम्न मध्यवर्गीय परिवार का जिम्मेदार लड़का है। जब तक वह छोटा था तब तक माँ बरतन माँजकर अपने बच्चों को पालती है।

लेकिन प्यारिया बड़ा होने पर खुद ही घर चलाता है। वह दिन-रात मेहनत करता है। फिर भी घर का खर्चा पूरा नहीं होता। इसीलिए वह बच्चों को पढ़ाने का काम करता है और घर के लोगों का पेट पालता है। गरीबी के कारण उन्हें अच्छा घर नहीं है। घर की मरम्मत करने के लिए पैसा नहीं है। बारिश के समय घर में सभी जगह पानी होता है। रहने के लिए अच्छी जगह नहीं रहती। गरीबी के कारण वह छत की मरम्मत नहीं कर सकता।

'नूराबाई' कहानी की नायिका नूरा पर गरीबी के कारण बड़े लोग अत्याचार करते हैं। नूरा के पति सूफी शराब पीने और वेश्या के पास जाने के कारण बीमार रहता है। नूरा अकेली कमाकर घर चलाती है। जद्देशाह नामक युवक सूफी का दोस्त नूरा के साथ अनैतिक संबंध जबरदस्ती से रखता है। उसके बेटी पर भी बलात्कार करता है। नूरा जहाँ काम पर जाती है वहाँ का सेठ एक दिन उनके बेटी को काम पर भेजने के लिए मजबूर करता है। नूरा की बेटी हसीना काम पर आने के बाद सेठ उस पर बलात्कार करता है। नूरा गरीबी के कारण अत्याचार सहती रहती है। गरीब लोगों पर बड़े लोग अत्याचार करते हैं, इसका चित्रण उपर्युक्त कहानी में चंद्रकांता ने किया है।

'पुनर्जन्म' कहानी का नायक गोपाल गरीबी के कारण बचपन में चोरी करता है। दूसरा पात्र दयाल एक गरीब, शरीफ लड़का है, लेकिन एक दिन मालिक के घर पैसे देखकर चोरी करता है और मालिक पर गोली झाड़ता है। मालिक खून से नहा जाता है। दयाल को पुलिस पकड़कर ले जाती है। मार-पीट करती है। तब दयाल कहता है - "इतना पैसा साहब ? कौन देता है ? मैं बौरा गया था साहब ! मैं सिनेमा देखना चाहता था, अच्छे कपड़े पहनना चाहता था साहब और मेरी माई सर्दी में अकड़ जाती थी। उसके पास गरम ओढ़ना नहीं था.... मैंने कसूर किया है, मुझे जेहल, फांसी दे दो, मैं साहब बनना चाहता था।"[17]

दयाल की बहुत उम्मीदे थीं। साहब बनने की, नौकरी करने की, लेकिन गरीबी के कारण वह चोर बनता है। परिस्थिति उसे चोर करने पर मजबूर करती है। इसका यथार्थ चित्रण लेखिका ने किया है।

4.3 धार्मिक समस्याएँ -

समाज में धर्म का अनन्य साधारण महत्त्व रहा है, जिसके आचरण के कारण मनुष्य में श्रेयस्कर की ओर की बढ़ने की लालसा या चाह रही है। मनुष्य के आचरण को हितकर बनाने के लिए 'धर्म' की सहायता तथा नियमन रहा है। वास्तविक दृष्टिकोण से 'धर्म' का अर्थ नियम, जो स्वयं मानव के हृदय तथा मन में विद्‌यमान है। वह सदाचार का नियम है।

निसर्ग में होनेवाले अत्यंत पवित्र मानवी जीवन से संबंध जीवन, विश्व तथा निसर्ग इन पर नियंत्रण रखनेवाली अलौकिक शक्ति पर मनुष्य की श्रद्‌धा होती है। उस शक्ति के अनुकूल पवित्र तथा घनिष्ट संबंध स्थापित करनेवाली अथवा सामाजिक मनः प्रवृत्ति तथा उससे निर्माण होनेवाली आचरण पद्‌धति को ही धर्म कहा जाता है और जो अपवित्र तथा अश्रेयस्कर होता है उसे ही अधर्म कहा जाता है। अप्रचलित धर्म का पालन करने में व्यक्ति जो आचरण अवलंब करता है उसमें अविश्वास करनेवाले व्यक्ति अधार्मिक कहे जाते हैं। इनके इस प्रकार आचरण के कारण ही धार्मिक समस्या निर्माण होती है।

मुसलमानों ने भारत में जब अपनी जड़े जमाई और अपने राज्य विस्तार के साथ धर्म-विस्तार करने का प्रयत्न शुरू किया तब भी धार्मिक समस्याएँ निर्माण हुई। अंग्रेजों के शासन काल में अंग्रेजों की दो-गली नीति के कारण हिंदू-मुसलमानों में फूट के बीज बोए गए और उसी के फलस्वरूप हिंदू-मुसलमानों के दंगे होते रहे।

1947 में धर्म के नाम पर भारत का विभाजन हुआ। उसी सिल-सिले में व्यापक रूप में हिंदू-मुसलमान संघर्ष होता रहा और आज भी छुट-पुट कारणों में मन-मुटाव होता है तब धार्मिक समस्याएँ होती हैं और सामाजिक अशांतता निर्माण होती है।

आज भी कश्मीर के नाम पर हर-रोज कितने कत्ल, बम-स्फोट हो रहे हैं। हमारे समाज में भूत-प्रेत, गृह-नक्षत्र, राशी-भविष्य, धार्मिक चमत्कार, रूढ़ि-परंपरा आदि पर विश्वास रखेनवाले और भूत-प्रेतादि के बाधाओं से मुक्त होने के लिए मंत्र-तंत्र आदि पर विश्वास रखनेवाले लोगों की भी कमी नहीं है। बुद्‌धिवादी वर्ग भी ऐसी बातों पर विश्वास रखता है। परंपरागत विश्वास और वैज्ञानिक

दृष्टिकोण के फलस्वरूप निर्माण होनेवाले अविश्वास में निरंतर संघर्ष चलता है और धार्मिक समस्या निर्माण होती है।

4.3.1 अंधश्रद्धा की समस्या -

पूरा विश्व विज्ञान के कारण चाँद पर निवास करने की लालसा मन में संजोए हुए है। उसमें हमारे देशवासियों में कुछ हितैषी भी है। लेकिन पुरातन काल से चली आयी अंधविश्वास की प्रवृत्ति आज भी हमारे देश में मौजुद है। उसमें फर्क इतना पड़ गया है कि यह प्रवृत्ति पहले से कम दिखाई देती है। निम्न वर्ग के लोग बड़े पैमाने पर अंध-विश्वास का शिकार बने हुए दिखाई देते हैं। इस प्रवृत्ति के शिकार साधारण लोग ही नहीं तो अफसर से राजनेता तथा हर क्षण विज्ञान का सहारा लेनेवाला डाक्टर तक है।

'मुक्ति-प्रसंग' कहानी में पिता के मृत्यु के बाद श्राद्ध करने आए हुए पुत्रों का चित्रण किया है। जब तक पिताजी जिंदा थे तब तक उसकी सेवा कोई भी नहीं करता। सिर्फ छोटा बेटा पिताजी की सेवा करता है। पिता की आत्मा को शांति मिले इस भावना से गंगा घाट पर पण्ड़ों से मंत्र, श्लोक पढ़वाकर पिताजी का श्राद्ध करते हैं। पितरों के ऋण से मुक्त होने का यही उपाय मानते हैं। उसी समय उनकी छोटी बहन बीमार पड़ती है या अपवित्र होती है। उसे टोकते हुए भाभीयाँ कहती हैं - ''बेचारी पिता को ही उसकी सेवा मंजूर नहीं होगी। अंतिम दर्शन भी कहाँ किये ? हाथ लगने होते तो उनकी मृत्यु के पश्चात् चार दिन बाद पहुँच पाती और अब देखो, इस वक्त अपवित्र होना। इस सबका कुछ मतलब तो होगा ही।''[18]

दान करने, श्लोक मंत्र पढ़ने तथा गरीब लोगों को वस्त्र देने से पिता की आत्मा को शांति मिलती है ऐसा यह बेटे मानते हैं। नई पीढ़ी शिक्षित होकर भी अंधश्रद्धा का पालन करती है और पिताजी की जीते जी उपेक्षा और मृत्युपरांत सम्मान करते हैं।

'दहलीज पर न्याय' कहानी की नायिका रूक्की शादी के पाँच साल बाद माँ बनती है। बच्चा होने के बाद वह देवी माँ और महंत के दर्शन कराने बच्चे को मंदिर ले जाती है। तब महंत रूक्की

को कहता है कि, माँ मेरे सपने में आयी थी और तुम्हारे बच्चे की बलि माँगी है। ऐसा कहकर महंत रूक्की को डराता है और कहता है - ''इसकी बलि देगी तो दस गबरू जनेगी। अभी तू जवान है। देवी माँ मेरे सपने में आयी थी।''[19] रूक्की घबराकर दूसरे गाँव भाग जाती है। महंत का पूरे गाँव में आतंक होने के कारण उसके खिलाफ कोई आवाज़ नहीं उठाता। लेखिका ने अंधश्रद्धा का चित्रण इस कहानी में किया है।

'हत्यारा' कहानी का पात्र नत्थासिंह धार्मिक मंत्र सीखकर गाँव आता है। खुद को 'औतारी' समझता है। गाँववाले भी उसके कहने में फँसते हैं और एक दिन पूरे गाँव के लोग उसका औतार देखने आते हैं। उसी समय नत्थासिंह कुछ धार्मिक मंत्र पढ़कर दो बच्चों की गर्दन काँटता है। उन्हें फिर से जिंदा करने की कोशिश करता है, लेकिन बच्चे को जिंदा नहीं कर सकता। नत्था को पुलिस पकड़कर जीप की तरफ ले जाती है तब भी नत्थासिंह चिल्ला-चिल्लाकर गाँववालों से कहता है कि - ''अगर पुलिस मुझे हारनियम देकर दीवान लगाने दे तो मैं बच्चों को फिर से जिंदा कर सकता हूँ।''[20] नत्थासिंह के 'औतारी' पुरुष बनने के ढोंग में दो बच्चों की जान जाती है। चंद्रकांता ने उपर्युक्त कहानियों में अंधश्रद्धा का यथार्थ चित्रण किया है।

4.3.2 सामाजिक रूढ़ि एवं परंपरा -

व्यक्ति समाज की इकाई है। मानव परिवर्तनशील प्राणी है। अन्वयार्थ समाज भी परिवर्तनशील है। किसी भी समाज के आदर्श, विश्वास, नियम, व्यवहार एवं मान्यताएँ समयानुसार बदलती रहती हैं। जो नियम अथवा मान्यताएँ नहीं बदलती वे रूढ़ि और परंपरा के क्षेत्र में आ जाती हैं। रूढ़ि और परंपरा को डॉ. प्रभा वर्मा ने बड़ी ही समर्पक शब्दों में व्याख्यायित किया है। उनके अनुसार - ''रूढ़ि एवं परंपरा के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है। रूढ़ि वह मान्यता है जो समयानुकूल अपनी उपयोगिता खोकर मृत प्राय: हो चुकी है। लेकिन फिर भी समाज का एक वर्ग उन मान्यताओं को मानता चला जाता है। रूढ़ि में किसी भी प्रकार के तर्क की उपेक्षा रहती है। परंपरा से अभिप्राय स्थूल अर्थों में रिवाज से है जो रिवाज अथवा मान्यताएँ व्यवहार में थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती रहती है वे परंपराएँ कहलाती हैं। परंपरा अपने मूल स्वरूप में

परिवर्तित नहीं होती, केवल उसे आचरण में लाने का विशिष्ट ढंग समयानुकूल परिवर्तित होता रहता है।''[21]

सामाजिक संगठन के लिए रीति-रिवाज, परंपराएँ, प्रथाएँ आदि बनाई जाती हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय समाज में काफी परिवर्तन आए हैं। जीवन के सभी मानदंड़ बदल चुके हैं। रूढ़ि-परंपराएँ काफी हद तक क्षीण होती चली जा रही हैं। फिर भी कुछ स्थानों पर इसका बोलबाला दिखाई देता है।

'गंगा नहाने के बाद' कहानी में पुराने रीति-रिवाज बदलते जा रहे हैं यह चित्रित किया है। कहानी की नायिका स्मित का विवाह अक्षय नामक लड़के से होता है। शादी के दिन सब रिश्तेदार, चाचीयाँ, ताई, रिश्ते की बहनें, मामियाँ बिदाई गीत गाते हैं। शादी के मंड़प में रंगोली सजाते हैं। अक्षय और स्मित को रंगोली पर खड़े करते हैं। तब बड़ी माँ आरती उतारती है। बर्फी का टूकड़ा बारी-बारी से दोनों के मुँह में देती है, तीन बार बर्फी खाने से स्मित नकार देती है। यह रिवाज उन्हें पसंद नहीं आता। तब वह गुस्से में आकर कहती है, ''झूठी बर्फी खाने पड़ेगी ? ओ माँ, मैं तो नहीं खाती देख लेना। कितना अनहाईजिनिका। तुम लोग आज भी पुराने सड़े रिवाज छोड़ नहीं सकते क्या ?''[22]

आज के लड़के-लड़कियाँ पुराने रीति-रिवाज नहीं मान रहे हैं। आधुनिक रिवाज, नियम अपनाए जा रहे हैं। पुराने रीति-रिवाज उन्हें पसंद नहीं हैं। इसका चित्रण इस कहानी में किया है।

'एक युद्ध और' कहानी की नायिका अपने भाई की पुत्री मुन्नी के शादी में जाती है। शादी में सब रिश्तेदार आते हैं। विवाह के समय हॉल में सभी महिलाएँ मंगलगीत गाती हैं। कुछ महिलाएँ लड़की के बाल बाँधने के लिए जाती हैं लेकिन मुन्नी ब्युटिशियन के पास मेकअप करने जाती है। मेहंदी-महावर लगी तो भी दुल्हन यो देर-सवेर घर से बाहर निकलती है। कुछ उच-नीच होने की उसे चिंता नहीं है। तब एक महिला कहती है कि, ''रीत-परंपरा भी कोई चीज है, पर ये आज कल की छोरियाँ।''[23]

मुन्नी जरा-जरा-सी बातों पर तुनक उठती है। आरती उतारे जाने पर भी मुन्नी कहती है कि आँच जरा दूर रखना। धुएँ से गला खराब होता है। मुन्नी की बुवा उसके बाल बँधाती है तो उसकी सहेलियाँ ब्युटिशियन से ही 'हेयरड्' करवाएगी, ऐसा कहती है। मुन्नी को माथे पर साड़ी खींच देने के कारण रोनी-रोनी-सी होती है।

आज की लड़कियाँ नए विज्ञापन के कारण बदल गई है। पुराने रीति-रिवाज नहीं पाल रही है। उपर्युक्त कहानियों के माध्यम से पुराने रीति-रिवाज टूटते जा रहे हैं, इसका चित्रण किया है।

4.3.3 आतंकवाद की समस्या -

आतंकवाद का साया आज धीरे-धीरे सारी दुनिया को अपने आगोश में लिपटा रहा है। चंद मुठ्ठी भर बद्दिमाग लोगों के द्वारा आतंक फैलाया जा रहा है। चंद्रकांता की कई कहानियों में आतंकवाद के फैलते जहर की चिंता प्रतिपादित हुई है।

'कित्थे जाणां पुत्तर' कहानी में आतंकवाद का चित्रण किया है। कश्मीर में हर रोज होनवाली हत्या, कत्ल, दंगा-फसाद को चित्रित किया है। कहानी की प्रमुख पात्र बुढ़ी बेजी के घरवालों को आतंकवादी मार देते हैं। सिर्फ बेजी ही बचती है। सब लोग गाँव छोड़कर दूसरे शहरों में बस जाते हैं। लेकिन कहानी का दूसरा पात्र किशना के पिताजी गाँव छोड़ने तैयार नहीं हैं। तब किशना पिताजी को कहता है, "वह सब छोड़ दो बापू, जिंदगी रही तो मजुरी कर लेंगे। इधर क्यों बेमौत मरें।"[24]

हर समय सिर पर मौत की छाया रहती है। इसीलिए बहुत लोग गाँव छोड़कर दूर जाते हैं। कोई भी व्यक्ति सुख-चैन से नहीं जी सकता, इसका यथार्थ चित्रण कहानी में किया है।

'रहमते बारान' कहानी की नायिका सुषी बहुत दिनों बाद शहर से गाँव आती है और अपने सहेली से मिलना चाहती है। अपने भाई और पुलिस के साथ सहेली से मिलने जाती है। हसीना सुषी के गले पड़कर रोती है। हसीना के भाई को आतंकवादी सरकारी जासूसी समझकर मार डालते हैं। बहु-बेटियों की इज्जत लुटते हैं। आतंकवादी के डर से रात होने से पहले ही सब घरों के दरवाज़े बंद होते हैं। बहुत लोग आतंकवादी के डर से घर-बार छोड़कर दूसरे शहर रहने जाते हैं।

'वितस्ता की जहर' कहानी का नायक शेखर को अपने परिवार की चिंता हर समय सताती रहती है। वह अपने घरवालों को आतंकवादी के डर से दूसरे शहर भेज देता है। शेखर जहाँ रहता है, वहाँ सभी धर्म के लोग रहते हैं। ये जो आतंक फैलाते हैं, वह सब पाकिस्तान के फुसलाए गए लोग हैं। शेखर कहता है कि, ''जो ऐसा करते हैं वे सब गुण्डे हैं। पाकिस्तान में ट्रेंड़, फुसलाए गए गुमराह लोग हैं। हमारे पास-पड़ोस में भी तो लोग हैं, वे क्या हमारे दुश्मन हो गए हैं। रियाज, नबी, सुलजु बल्कि रियाज भी दु:खी है। अमीराक दल में उसकी हाईवेअर की दुकान जला डाली बदमाशों ने।''[25]

इन तीनों कहानियों में पंजाब और कश्मीर में व्याप्त आतंकवाद का चित्रण किया है। इन प्रांतों के विभिन्न धार्मिक आस्थावाले जो परंपरागत निवासी हैं उनमें कोई बैर-भाव नहीं है। उनके लिए दीन-धर्म तो अपना-अपना पर प्यार मुहब्बत साझा है। वे एक-दूसरे के रक्षक हैं। लेकिन चंद मुट्ठी भर बददिमाग पाकिस्तान के आतंकवादियों ने उनमें भेद और आतंक फैला रखा है। चंद लोग कश्मीर को पाने के लिए आतंक फैला रहे हैं और गरीब लोगों की हत्या कर रहे हैं। इसका यथार्थ चित्रण चंद्रकांता ने उपर्युक्त कहानियों के माध्यम से किया है।

4.4 राजनीतिक समस्याएँ -

भ्रष्ट राजनीति के कारण आज अनेक लोगों को इस समस्या की चोट पहुँच रही है। अनेक गरीब लोग इसमें पीसे जा रहे हैं। अधिकारी लोग इन लोगों को चूस रहे हैं। एक ओर गरीबी, तो दूसरी ओर शोषक वर्ग, इनके बीच ये लोग छटपटा रहे हैं। इनमें अनेक लोग घुट-घुटकर मर रहे हैं। सरकारी कार्यालयों, पुलिसथाने, अनेक बड़े-बड़े दफ्तरों में गैर कारोबार चलते हैं। इसका अंजाम गरीब लोगों पर होता है। आज भ्रष्टाचारी लोगों की संख्या बढ़ रही है। सरकारी दफ्तरों में एखाद काम पूरा करने के लिए रिश्वत लिए बिना उसे हाथ नहीं लगाया जाता। इसी कारण गरीब और मध्यवर्गीय लोग चूसे जा रहे हैं।

चंद्रकांता की निम्नलिखित कहानियों में राजनैतिक समस्या उजागर हुई है . जिसके कारण कहानियों के पात्र जटील-से-जटील परिस्थितियों का सामना कर थक गए हैं। 'सूरज उगने तक',

'धराशायी', 'दहलीज पर न्याय' आदि कहानियों के माध्यम से सरकारी दफ्तरों, पुलिसथाने, अफसर लोग आदि पर तीखा व्यंग्य किया है।

4.4.1 भ्रष्टाचार की समस्या -

भ्रष्टाचार आज समाज में सभी ओर दिखाई देता है। भ्रष्टाचार के कारण गरीब अधिक गरीब होते जा रहे हैं और अमीर अमीर बनते जा रहे हैं। भ्रष्टाचार करना यह एक फैशन बन गई है और इस फैशन की दुनिया में हर एक आगे बढ़ने लगा है। लेखिका ने निम्नांकित कहानियों में बढ़ते भ्रष्टाचार का चित्रण किया है।

'सूरज उगने तक' कहानी में भ्रष्टाचारी दर साहब का चित्रण किया है। दर साहब एक सरकारी चीफ इंजीनियर है। वह काम पर आए मजदूरों को लूटता है। हर मजदूर से कमीशन लेता है। दर साहब चाय-पानी तक की रकम मजदूर या कामगारों से लेता है। चीफ के भय से कामगार या मजदूर उन्हें कमीशन देते हैं। डिविजनल इंजीनियर, काँट्रेक्टर तक उसे कमीशन देते हैं। अगर कमीशन न दिया तो काम से निकाला जाता है। दर साहब भ्रष्टाचार करके बहुत पैसा कमाते हैं। इस तरह दर साहब मजदूर से लेकर काँट्रक्टर तक का शोषण करते हैं।

4.4.2 अफसर लोगों का नौकरों पर अत्याचार -

आजकल अफसर लोग अपने ऑफिस में काम करनेवाले लोगों पर अत्याचार कर रहे हैं। हर अफसर अपने ज्युनियर अफसर या नौकरों पर रौब दिखाते हैं। उसका मानसिक हनन करते हैं। इसका चित्रण 'धराशायी' कहानी में किया है।

'धराशायी' कहानी की नायिका वी. वी. पर अपने ऑफिस के मालिक सत्याग्रही साहब अत्याचार, अन्याय करते हैं। सत्याग्रही साहब जो अपनी प्रशंसा करता है उसे ही पद्दोन्नति देते हैं। वी. वी. स्वाभिमानी युवती है। वह हर समय अपने काम में व्यस्त रहती है। लेकिन वी. वी. को पद्दोन्नति नहीं दी जाती। तब वी. वी. सत्याग्रही साहब के खिलाफ (विरूद्ध) आवाज़ उठाती है।

हड़ताल करती है। फिर भी सत्याग्रही साहब उसकी एक नहीं सुनते। सबसे वरिष्ठ (सीनियर) होकर भी उसे अपने पहले ही जगह रहना पड़ता है। सत्याग्रही साहब के नौकरों पर किए हुए अत्याचारों का चित्रण लेखिका ने उपर्युक्त कहानी के माध्यम से किया है।

4.4.3 रक्षक ही भक्षक बनने की समस्या -

आज रक्षक ही भक्षक बनते जा रहे हैं। जिसके उपर मनुष्य का विश्वास है, वह पुलिसवाले, बड़े लोग, राजनेता के दबाव में आकर गरीब लोगों का भक्षण कर रहे हैं। इसका चित्रण लेखिका ने 'दहलीज पर न्याय' कहानी में किया है।

'दहलीज पर न्याय' कहानी की नायिका रूक्की जब गाँव के महंत के डर से भाग जाती है तब वह पुलिसथाने मदद माँगने तथा महंत के विरूद्ध रिपोर्ट दर्ज करने जाती है। तब पुलिसवाले रूक्की की हँसी उड़ाते हैं। उस पर अत्याचार करते हैं। हर तरह के भद्दे इशारें करके अपमानित करते हैं। रूक्की चुप-चाप सहने के सिवा कुछ नहीं कर सकती। आज जो आदमी के रक्षण करनेवाले हैं वहीं भक्षण कर रहे हैं, अत्याचार कर रहे हैं इसका यथार्थ चित्रण लेखिका ने उपर्युक्त कहानी में किया है।

निष्कर्ष -

मनुष्य पैदा होते ही उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हर युग में समस्याएँ होती हैं। लेकिन हर युग की समस्याएँ एक जैसी नहीं हो सकती। मानव को विकास के साथ ही किसी-न-किसी प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कोई युग ऐसा नहीं कि उस युग में मानव को कोई समस्याएँ नहीं थी। समस्या निर्माण के कारण भी भिन्न हैं किंतु किसी-न-किसी रूप में समस्याएँ होती हैं। परंतु मनुष्य ने उन समस्याओं का हल निकाल कर विकास किया है।

चंद्रकांता के 'सूरज उगने तक' और 'दहलीज पर न्याय' कहानी संग्रहों में कुल-मिलाकर अड़तिस (38) कहानियाँ हैं। हर कहानी में भिन्न-भिन्न समस्याओं का चित्रण हुआ है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ पैदा हुई थी। वर्तमान युग में बेकारी की समस्या बढ़

गई है। शहरीकरण का परिणाम कस्बाई जीवन पर हो गया है। महानगरीय जीवन में अजनबीपन, अविश्वास, टूटते दांपत्य संबंध, भूख की समस्या, दिखावटीपन की समस्या का चित्रण हुआ है।

नेता लोग सामान्य व्यक्ति को किस प्रकार गुमराह करते हैं। बेरोजगारी के कारण युवक को दर-दर की ठोकरे खाते हुए पागल की तरह रास्ते पर घूमना पड़ रहा है। आज भी जनता का शोषण हो रहा है इसका यथार्थ चित्रण कहानियों में किया है।

वेश्या का शोषण, मजदूरों का शोषण, भ्रष्टाचार आदि के आर्थिक चित्र कहानियों में शब्द-बद्ध हुए हैं। टूटते हुए संबंध में पति-पत्नी के बीच तनाव है। पत्नी स्वतंत्रता चाहती है और पति अपना स्वार्थ देख रहा है। दोनों में मेल नहीं है। माता-पिता, भाई-बहन आदि के संबंधों में विघटन आ रहा है। पुरूष-प्रधान संस्कृति में स्त्री की कमाई पर जीनेवाले पुरुष की हालत अपमानकारक हो रही है।

लेखिका ने अस्पताल की दुरावस्था, टूटते संबंध, निसंतान को समाज में स्थान, नेता की कूटनीति, विधवा समस्या, रक्षक ही भक्षक बनने की समस्या, आतंकवाद की समस्या, बेकारी की समस्या, आंतर्जातिय विवाह की समस्या, दहेज समस्या, रूढ़ि-परंपरा आदि समस्याओं को यथार्थ रूप में उजागर किया है।

उपर्युक्त समस्याओं का चित्रण लेखिका ने सफलता से विवेच्य कहानी-संग्रहों में किया है जो बड़ा मार्मिक है। उपर्युक्त कहानियों में चित्रित समस्याएँ अपने परिवेश से पूर्णतः तादात्म्य रखती हैं।

संदर्भ सूची

1. उषा मंत्री, हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक संदर्भ, पृ. 6
2. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 65
3. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 87
4. महेंद्रकुमार जैन, हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण, प्राक्कथन से
5. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 140
6. वही, पृ. 141
7. वही, सूरज उगने तक, पृ. 137
8. वही, पृ. 235
9. वही, पृ. 158
10. वही, पृ. 119
11. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 60
12. वही, सूरज उगने तक, पृ. 208
13. डॉ. देवराज उपाध्याय, आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य और मनोविज्ञान, पृ. 40
14. डॉ. अर्जुन चव्हाण, अनुवाद चिंतन, पृ. 27
15. चंद्रकांता, सूरज उगने तक, पृ. 184
16. वही, पृ. 241
17. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 104
18. वही, सूरज उगने तक, पृ. 241
19. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 2
20. वही, पृ. 27
21. डॉ. विभा वर्मा, हिंदी उपन्यास : सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप, पृ. 39-40
22. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 112
23. वही, पृ. 69
24. वही, सूरज उगने तक, पृ. 47
25. वही, पृ. 251